



इसरो का 'बाहुबली' कदम

देश का सबसे शक्तिशाली रॉकेट जीएसएलवी मार्क-3 लॉन्च

वजन 640 टन
करीब 200 हाथियों के बराबर

चार टन के उपग्रह ले जाने की क्षमता
जीसैट-19 का प्रक्षेपण

एजेंसी/वेनई
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अपने सबसे भारी और शक्तिशाली रॉकेट जीएसएलवी मार्क-3 के जरिए भारतीय संचार उपग्रह जीसैट-19 का सोमवार को आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से सफल प्रक्षेपण किया। इसरो द्वारा निर्मित जीएसएलवी मार्क-3 रॉकेट 640 टन वजनी है। रॉकेट के साथ छोड़ा जाने वाला संचार उपग्रह जीसैट-19 का वजन लगभग 3,136 किलोग्राम है।

भारत में ही विकसित
इस रॉकेट की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसके मुख्य और सबसे बड़े क्रायोजेनिक इंजन को इसरो के वैज्ञानिकों ने भारत में ही विकसित किया है।

यह है उद्देश्य
जीएसएलवी मार्क-3 को प्रक्षेपित करने का मुख्य उद्देश्य अधिक वजन वाले संचार उपग्रह जीएसएटी-19 को जीटीओ (जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट) में प्रवेश कराना है। इस प्रक्षेपण यान के लिए उच्च गति वाले क्रायोजेनिक इंजन को करीब 30 साल के शोध के बाद इसरो ने बनाया है। इसको बनाने में 160 करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च आया है।

विदेशों पर निर्भरता नहीं रहेगी
इससे पहले भारत को अगर 2.3 टन से अधिक वजन के संचार उपग्रह का प्रक्षेपण करना होता था तो इसके लिए विदेश जाना पड़ता था। जीएसएलवी मार्क-3 के कामकाज शुरू करने के बाद भारत संचार उपग्रहों के प्रक्षेपण में आत्मनिर्भर हो जाएगा और विदेशी ग्राहकों को लुभाने में भी सफल होगा।

अब इंटरनेट की गति में बेतहाशा वृद्धि हो जाएगी
संचार उपग्रह जीसैट-19 के सफल प्रक्षेपण के बाद इंटरनेट की गति में बेतहाशा वृद्धि हो जाएगी। यह प्रति सेकेंड चार गीगाबाइट डेटा देने में सक्षम होगा और इसकी कार्यविधि 15 वर्ष होगी।